दाएं-बाएं हाथ का सोच लचीला है

दाएं हाथ से काम करने वाले हों या बाएं हाथ से, सब लोग अपने प्रमुख कामकाजी हाथ के साथ 'अच्छाई' का सम्बंध देखते हैं। मगर एक ताज़ा प्रयोग से पता चला है कि इस सम्बद्धता को आसानी से बदला जा सकता है।

मैक्स प्लांक इंस्टीटच्यूट फॉर साइकोलिंग्विस्टिक्स, नैदरलैंड के डेनियल कासासान्टो और उनकी टीम ने इस बात की जांच पड़ताल के लिए एक अध्ययन किया। यह अध्ययन ऐसे लोगों के साथ किया गया था जिन्हें स्ट्रोक हो चुका था। शोधकर्ताओं ने दो चौखाने बनाए और उनके बीच में एक कार्टून चरित्र रखा। उन्हें यह बताया गया कि "वह (कार्टून चरित्र) ज़ेब्रा से प्यार करता है और मानता है कि ज़ेब्रा अच्छे होते हैं लेकिन पांडा से नफरत करता है और मानता है कि वे बुरे होते हैं।" इसके बाद उन लोगों से पूछा गया कि वह कार्टून चरित्र किस जंतु को किस चौखाने में रखेगा।

ये सभी 13 व्यक्ति दाएं हाथ वाले थे। लेकिन उनमें से 8 लोगों ने स्ट्रोक के कारण अपनी दाईं बाजू पर नियंत्रण गंवा दिया था। इनमें से 7 लोगों का कहना था कि ज़ेब्रा को बाईं तरफ रखा जाना चाहिए। बचे हुए 5 लोगों ने ज़ेब्रा के लिए दाईं तरफ के चौखाने को चुना।

इसके बाद इस टीम ने 55 दाएं कामकाजी हाथ वाले विद्यार्थियों को किसी भी एक हाथ पर भारी दस्ताने पहनने को कहा। इसके बाद उन्हें डोमिनो नामक एक खेल खेलने को कहा गया। इसके बाद जब उनसे ज़ेब्रा/पांडा वाला सवाल पूछा गया तो इस बात की संभावना पांच गुना अधिक पाई गई कि विद्यार्थी ज़ेब्रा को अपने क्रियाशील हाथ की तरफ वाले चौखाने में रखेंगे।

डेनियल कासासान्टो का कहना है कि यदि चंद मिनटों तक दस्ताने पहने रहने के कारण हमारा अच्छे-बुरे सम्बंधी सोच बदल जाता है, तो मतलब यह है कि हमारा सोच काफी लचीला है। ***(स्रोत फीचर्स)***